मयंक के चुनिंदा मुक्तक

(251 मुक्तकों का संग्रह)

रचनाकार

के.के. सिंह मयंक

संकलन कर्ता

पूजा सिंह मण्डल

पी.एम. पब्लिकेशंस

दिल्ली • मुंबई • पटना • लखनऊ • आगरा

प्रकाशक :

पी.एम. पब्लिकेशंस

10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
☎: +91-11-23268292/93, 23279900, : +91-8285757716
फैक्स : 91-11-23280567
ई-मेल : pmpublications@gmail.com
वेबसाइट : www.pmpublications.in

शाखाएं :-

- **दिल्ली : हिन्द पुस्तक भवन**
  6686 खारी बावली (तिलक बाजार के सामने) दिल्ली-110006
  ☎: +91-11-23911979, 23944314, : +91-9716209188
  ई-मेल : hindpustakbhawan@gmail.com
- **पटना** : बी.एम. दास रोड, (निकट श्याम पुस्तक मंदिर)
  खज़ांची रोड, पटना-800004, : +91-8102225580
  ई-मेल : pmpublicationspatna@gmail.com
- **मुंबई** : 138, डी.एन. रोड, निकट सी.एस.टी. फोर्ट, मुंबई-400001
  ☎: +91-22-22034631, : +91-9819270684
  ई-मेल : pmpublicationsmumbai@gmail.com
- **लखनऊ** : सी-792, महानगर-सी, लखनऊ-226006, : +91-7291981891
- **आगरा** : 206, जयपुर हाउस, आगरा-282002, : +91-7291981896

© कॉपीराइट : **लेखकाधीन**

पहला संस्करण : 2016

ISBN : 978-93-85910-33-3

'पी.एम. पब्लिकेशंस' ने इस पुस्तक में विविध स्रोतों से उपलब्ध जानकारियां जुटाई हैं, जो सच्ची, वास्तविक और विश्वसनीय लगती हैं, फिर भी **'प्रकाशक'** या उनके लेखक या चित्रकार किसी भी छपी जानकारी के बिल्कुल शुद्ध होने की जिम्मेदारी नहीं लेते। यदि इससे किसी भी प्रकार की हानि होती है, तो उसे स्वयं ही वहन करना पड़ेगा।

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक के तथा इसमें समाहित सारी सामग्री (रेखा व छायाचित्रों सहित) के सर्वाधिकार **'प्रकाशक'** के पास सुरक्षित हैं। इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटल, डिजाइन, अंदर का मैटर, चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़ कर एवं किसी भी भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर वे समस्त हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।

मुद्रक : एस.आर.के. ग्राफिक्स, दिल्ली

अपनी बात

कविता, गीत, ग़ज़ल, देश-प्रेम आदि की पच्चीस किताबें, जिनमें एक-एक उर्दू और हिन्दी के दीवान भी शामिल हैं, के बाद नया क्या किया जाए, यह विचार बार-बार दिमाग़ को झिंझोड़ता रहा। इधर कई मित्रों तथा स्नेहजनों ने मुक्तकों के लिए प्रेरित किया। दो मिसरों में अपनी बात कहने वाला शायर, चार मिसरों में कुछ कहे तो कैसे, यह एक समस्या थी लेकिन चैलेंज समझकर इसे स्वीकार कर लिया। जब लिखने बैठा तो दिमाग़ में कभी ग़ज़ल, कभी देश प्रेम, कभी गीत के कीड़े कुलबुलाने लगे मगर अन्त भला तो सब भला...।

कोई किताब लिखना आसान होता है। लिखने के बाद किताब का प्रकाशन एक ऐसी टेढ़ी खीर है जिसे चबाना या निगलना दोनों मुश्किल हैं। मेरी आँखों की रोशनी, उम्र के साथ-साथ घटती जा रही है। सामग्री का संकलन, प्रबन्धन यह सब सामान्य व्यक्ति के लिए आसान हैं, मेरे जैसे अल्प दृष्टि वाले के लिए रेगिस्तान में बिना पानी लिए यात्रा करने जैसा है। प्रकाशक का चुनाव, यह एक ऐसा जटिल कार्य है जिसमें धोखा खा जाने की संभावना शत-प्रतिशत बनी रहती है। लेखक के पास अप्रकाशित पुस्तक है, यह समाचार मिलते ही प्रकाशकों का हमला शुरू हो जाता है। यह सौभाग्य है कि आपको घर बैठे अच्छा प्रकाशक मिल जाए।

इस मुश्किल से उबारा मुझे मेरे मित्र देवराज अरोड़ा ने। देवराज साहित्य-प्रेमी हैं और पूरे देश में पुस्तक मेलों के आयोजन के लिए मशहूर ही नहीं, बदनाम भी हैं। उन्होंने पुस्तक प्रकाशन का ज़िम्मा ख़ुद उठा लिया और मुझे भाग-दौड़ से निजात दिला दी।

एक अच्छे काम में ऊपर वाले की सहायता भी मिलती है। पुस्तक को प्रकाशक तक भेजने की योजना में एक अड़चन आई। प्रकाशक ने पूरा मसौदा टाइप करके भेजने की मांग की। अब यह काम कैसे हो। मेरे छोटे भाई जैसे नवीन शुक्ल 'नवीन', जो ख़ुद भी एक अच्छे शायर हैं, ने यह दुष्कर कार्य अपने हाथों में लेकर मुझे पूरी तरह चिंतामुक्त कर दिया। नवीन की सज्जनता पूरे लखनऊ में मशहूर है। उन्होंने प्रूफ़ पढ़कर उसे ठीक करने की भी ज़िम्मेदारी स्वयं उठा ली।

इतनी आसानियाँ मिलने का नतीजा यह रहा कि यह किताब कब शुरू हुई और प्रेस में कब पहुँची, मुझे पता ही नहीं चला। मित्रों ने सारा काम राकेट की गति से करके मुझे परेशानियों से दूर कर दिया। मुक्तकों की संख्या अधिक हो गई थी लिहाज़ा यह तय किया गया कि सर्वश्रेष्ठ मुक्तक ही पुस्तक में रखे जाएँ। मेरे लिए कठिन था कि अपने ही मुक्तकों में से अच्छे और बुरे छाँटूँ। इस कार्य में मेरी बेटी पूजा ने मेरी मदद की।

मुक्तकों के इस प्रकाशन में भाई अरविंद असर और सर्वत जमाल के सहयोग का उल्लेख करना भी जरूरी है। इन सब के सहयोग से यह संकलन आप तक पहुँचा रहा हूँ। पुस्तक आपके हाथों में है। अच्छी या बुरी, कैसी भी प्रतिक्रिया की मुझे प्रतीक्षा रहेगी। आशा है, आप दो बोल कह कर मुझे और आगे बढ़ने का हौसला प्रदान करेंगे।

के.के. सिंह 'मयंक'
5/597, **विकास खण्ड**
गोमती नगर, लखनऊ (यू.पी.)
मोबा. : 9415418569

संकलन के बारे में

मेरे पिता श्री के.के. सिंह मयंक जो पहले रेलवे में बहुत बड़े अधिकारी थे, बचपन से ही साहित्य में अभिरुचि रखते हैं। हिंदी और उर्दू साहित्य के माध्यम से लिखी गई इनकी ग़ज़लें, गीत, मुक्तक, नज़्म, नात, मनक़बत, सलाम, भजन एवं देश-भक्ति गीत मैं बचपन से सुनती आ रही हूँ। इन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय देश-विदेश के कवि सम्मेलनों, मुशायरों, रेडियो, टी.वी., मैगज़ीन, अखबारों के माध्यम से समाज को दिया है। इनकी ग़ज़लें देश के प्रसिद्ध गायकों द्वारा गई हैं और गायी जा रही हैं। इनके सैकड़ों मुक्तक इधर-उधर बिखरे पड़े होने के कारण किताब की शक्ल नहीं ले पा रहे थे। अतः मेरे आग्रह पर उन्होंने अपने मुक्तकों का प्रकाशन इस शर्त पर स्वीकार किया कि मैं अपनी पसंद के चुनिंदा मुक्तक एकत्रित करके किताब की शक्ल में पाठकों के सम्मुख लाऊँ। अतः मैंने अपने प्रयास से मुक्तकों का चयन किया, जो किताब के रूप में आपके समक्ष हैं।

मैं चाहूँगी, कि आप इन मुक्तकों का अध्यन करके अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करायें तथा यह भी बताएँ कि मेरे द्वारा किए गए मुक्तकों का चयन आपको कैसा लगा।

पूजा सिंह मण्डल
मोबा. : 9432332150
ई-मेल : mandolps@gmail.com

अनुक्रम

खण्ड 1 - शृंगार ... 9-32

खण्ड 2 - हास्य व्यंग्य ... 33-74

खण्ड 3 - देशभक्ति ... 75-82

खण्ड 4 - सामाजिक ... 83-108

खण्ड 5 - विविध ... 109-142

खण्ड 1

शृंगार

वो जिन आँखों से हरदम प्यार की बरसात होती थी
उन्हीं आँखों से अब बस दर्द के शैलाब आते हैं
सबब पूछा जो हमने तो वो हमसे हँसकर यूँ बोले
तुम्हारी याद आती है, तुम्हारे ख़्वाब आते हैं।

नम होंठ, नज़र शोख़ ये माथे का पसीना
देखा जो उसे आज तो अच्छा लगा जीना
झुरमुट में वो सखियों के नज़र आती है जैसे
सोने की अँगूठी में हो हीरे का नगीना

इस ज़हन में बसे हैं किसी कहकशाँ के ख़्वाब
पेशे नज़र हैं मेरे अभी इम्तेहाँ के ख़्वाब
मैं इक ग़रीब शख़्स मगर वह अमीर है
कैसे ज़मीन देखे भला आसमाँ के ख़्वाब

ख़ूबसूरत शफ़क़ है आँखों में
मोतियों की चमक है दाँतों में
चाँदनी में नहाया वो पैकर
काश आ जाए मेरी बाहों में

नज़र अंदाज हमको कर रही थीं एक मुद्दत से
सुना उन झील सी आँखों में अब सैलाब आते हैं
जब इक दिन उनसे पूछा तो वो शरमाते हुए बोले
तुम्हारी याद आती है, तुम्हारे ख़्वाब आते हैं

गुलबदन, तेरा सरापा मुझको
खुशनुमा बाग़ नज़र आता है
चांद मैं तुझको कहूँ, नामुमकिन
चाँद में दाग़ नज़र आता है

उस हुस्ने बेमिसाल को किस की मिसाल दें
आँखों का रंग और शराबों का रंग और
हर क़िस्म के गुलाब खँगाले गए मगर
होठों का रंग और गुलाबों का रंग और

टिमटिमा कर बुझ गए तारे सभी
रोशनी ने ख़ुद को ज़िंदा कर लिया
चाँदनी में आई जब टेरिस पे वो
चाँद ने शर्मा के पर्दा कर लिया

फ़ोन, इंटरनेट न चिट्ठी कुछ नहीं
मुझको अब ये दूरियाँ खलने लगीं
इंतज़ार आख़िर करे कब तक कोई
हुस्न की ख़ामोशियाँ खलने लगीं

आँखें कभी बताई गईं हैं शराब सी
चेहरे की ताज़गी को बताया, गुलाब सी
नज़दीक हो, क़रीब हो, दिल में भी हो मगर
सूरत तुम्हारी आज भी लगती है ख़्वाब सी

कभी बन कर, सँवर कर तुम किसी गुलशन में मत जाना
सुमन मुरझाएँगे, भौरों से गुलशन छूट जाएगा
ज़रा ठहरो, तुम्हारे रूप से किरनें बरसती हैं
निहारोगे अगर दर्पण, तो दर्पण टूट जाएगा

घटा से बाल, बिजली सी नज़र, रुख़सार पर तिल है
तुम्हारा हुस्न इक तूफ़ान है और दूर साहिल है
तुम्हें जिस दिन से देखा है नहीं मालूम कुछ हमको
दिमाग़ अपना कहाँ है, हम कहाँ हैं, किस जगह दिल है

तुम्हारे हुस्न की तारीफ़ लिक्खेंगे हमीं तन्हा
समंदर को सियाही में बदलना हमको आता है
तुम्हारे प्यार में क़ुर्बान होकर भी दिखा देंगे
पतंगे की तरह हर लौ में जलना हमको आता है

पता है दिल का चकनाचूर होना
मगर मुश्किल है तुमसे दूर होना
मुझे ठुकरा के कैसे सुन सकोगी
जिगर के ज़ख़्म का नासूर होना

रूप ऐसा जब भी देखूँ मैं उसे
मन के अंदर नाचने लगते हैं मोर
पांव में छाले न पड़ जाएँ कहीं
नर्म–नाज़ुक पाँव और धरती कठोर

उनकी तरफ़ से कोई इशारा नहीं मिला
लेकिन हमारा दिल तो मुहब्बत में चूर है
अब तक ये लग रहा था कि हम तीरगी में हैं
वो आ गए तो देखिए महफ़िल में नूर है

हुस्न की उसके क्या करूँ तारीफ़
जैसे बदली में माहताब खिले
रंगत ऐसी है रूप की जैसे
दूध में शहद और गुलाब मिले

जब उनकी ज़ुल्फ़ से बूँदें गिरीं तो
लगा जैसे कि बारिश हो रही है
सुना है लोग उन पर मर रहे हैं
मुझे जीने की ख़्वाहिश हो रही है

दीवाना अपने हुस्न से हर पल किया मुझे
नैनों के तीर छोड़ के घायल किया मुझे
जादू है उसमें ऐसा, मैं सैलाब था मगर
बस इक निगाह डाल के मरुथल किया मुझे

तेरी परछाईं गुलशन पर पड़ी थी
गुलों के जिस्म पीले पड़ गए हैं
बनाऊँ किस तरह तस्वीर तेरी
यहाँ सब रंग फीके पड़ गए हैं

लोग सूरत देखते ही मर मिटे
मुस्कुराती आँख होटों पर हँसी
लेकिन उसका दिल है पत्थर का बना
उसकी फ़ितरत में बसी है बेरुख़ी

तन्हाइयों के दौर को महफ़िल समझ लिया
तूफ़ान में भँवर को भी साहिल समझ लिया
अब जा के दिन को चैन मिला रात को सुकून
जब ज़िंदगी में आप को शामिल समझ लिया

रासलीला है कहीं पर और न गीता ज्ञान है
आज हर कोई तेरी महिमा से क्यों अन्जान है
क्या हुआ ऐ कृष्ण तेरी बाँसुरी को क्या हुआ
गोपियाँ दिखतीं नहीं, यमुना का तट वीरान है

हर तरफ़ मदहोशियाँ छाने लगीं
शाम की तन्हाइयाँ जाने लगीं
तुमने आने का इरादा कर लिया
रोशनी की आहटें आने लगीं

जिगर का दर्द, उलझन, बेक़रारी
तुम्हारी चंद सौग़ातें हैं मेरी
तुम्हारे ख़्वाब आ जाते हैं मुझको
चलो अच्छा हुआ रातें हैं मेरी

पूछिए मत, क्या बताऊँ मैं अदाओं का हिसाब
दोस्त अकसर माँग लेते हैं वफ़ाओं का हिसाब
यह ज़बाँ थकने लगी और हाथ कब के थक चुके
कोई रखता ही नहीं मेरी दुआओं का हिसाब

नूर में यह सदी नहाई थी
मेरी तक़दीर में जुदाई थी
तेरा आना था चंद लम्हों का
कैसे कह दूँ बहार आई थी

सभी कहते हैं तुम मासूम हो, सूरत भी प्यारी है
तुम्हारे नाम पर यह ज़िंदगी हमने गुज़ारी है
हमें मालूम है पत्थर कभी पूजे नहीं जाते
मगर फिर भी तुम्हारी आरती हमने उतारी है

सभी सुनते हैं भौरों का तराना
कोई सुनता नहीं फूलों की भाषा
तुम्हारे दर पे मुद्दत से खड़ा हूँ
भला समझोगी कब आँखों की भाषा

कुछ ग़लत फ़हमियाँ बस जाती हैं दिल के अंदर
दूर रहने से मुहब्बत नहीं हो पाती है
एक ही बार मुझे मिलने का मौक़ा दीजे
मुझसे ख़्वाबों की हिफ़ाज़त नहीं हो पाती है

नज़र क़ातिल, अदा क़ातिल तुम्हारी
हमारा दिल लिया पहचान ले ली
झलक इक बार दिखलाई थी मुझको
मगर तुमने हमारी जान ले ली

तुझ पे क्या गुज़री नहीं मालूम कुछ
याद है तुझ से जुदाई हमनवा
एक मीठी सी कसक दिल में हुई
जब भी तेरी याद आई हमनवा

रफ़्ता रफ़्ता मेरे दर्द थकने लगे
ज़हन के सारे पर्दे सरकने लगे
मिल गई है अँधेरे में भी रोशनी
तेरी यादों के जुगनू चमकने लगे

वह भी दीवानी थी मेरी ख़ातिर
और हम भी थे जिसके दीवाने
बाद मुद्दत के सामना तो हुआ
कौन इक दूसरे को पहचाने

अपनी अपनी आदतों में पल गए
जिस तरह क़ुदरत ने ढाला, ढल गए
इश्क़ का कुछ भी न बिगड़ा धूप में
हुस्न वाले चाँदनी में जल गए

तुम्हारे वास्ते फूल और कलियाँ चुन रहा हूँ मैं
मिलन का है मुझे विश्वास, सपने बुन रहा हूँ मैं
तुम्हारा मौन कहता है कि तुमको प्यार है मुझसे
तुम्हारे दिल की धड़कन दूर से भी सुन रहा हूँ मैं

तमन्नाएँ मचलती हैं मेरे नन्हे से इस दिल में
सुकूँ मिलता है अकसर और कभी रहता हूँ मुश्किल में
मुझे अपनाओ या ठुकराओ, दे दो फ़ैसला अपना
हज़ारों हसरतें लेकर मैं आ पहुँचा हूँ महफ़िल में

ऐसा गए, पलट के नहीं देखा आपने
शायद समय से कर लिया समझौता आपने
मुद्दत हुई है आपको देखे हुए मुझे
मैं कैसे जी रहा हूँ कभी सोचा आपने

हमारी शान थी, हम थे हज़ार काँधों पर
विदा की बेला मगर, हैं सवार काँधों पर
सभी ने देखा उठी धूम धाम से बारात
उठा के लाए हैं दूल्हे को चार काँधों पर

जो दुख से चूर हैं उनको भी बेबस हम नहीं कहते
किसी भी क़ीमती पत्थर को पारस हम नहीं कहते
कभी घूँघट, कभी पर्दा मगर जलवा तो रहता है
छुपा हो चाँद तो उसको अमावस हम नहीं कहते

किसी के नर्म, नाज़ुक होंठ जब भी मुस्कुराते हैं
मेरी आँखों में उस पल चाँद तारे झिलमिलाते हैं
क़रीब उसके नहीं जाते मगर होता है यह अकसर
हम उस की झील सी आँखों में कैसे डूब जाते हैं

क़यामत है क़यामत जानता हूँ
मैं अनजामे मोहब्बत जानता हूँ
बनामे इश्क़ धोखा ही करेंगे
हँसीनों की मैं फ़ितरत जानता हूँ

खण्ड 2

हास्य व्यंग्य

सब के हालात जानते हैं हम
किस लिए सब नज़र चुराते हैं
हम भी शादी के बाद हाई हील
सुब्ह और शाम रोज़ खाते हैं

यही सच्चाई है इस युग की प्यारे
यही सिद्धांतवादी बोलते हैं
जो सत्ता पक्ष का हित है सदन में
उसे हम राष्ट्रवादी बोलते हैं

लक्ष्मी विख्यात हैं धन के लिए
जिस तरह अन्ना जी अनशन के लिए
कोई भी पिछड़ा हमें अब मत कहे
हम भी चर्चित हैं करप्शन के लिए

सूट, शर्ट और टाई छोड़े
क्रीम, पाउडर, डाई छोड़े
यार कफ़न मैं ले आऊँगा
पहले यह महँगाई छोड़े

फिर कोई सारे हसीं मंज़र बहा कर ले गया
जिस तरह नदियों को अपने साथ सागर ले गया
देखिए अगला इलेक्शन हम से ले जाता है क्या
यह इलेक्शन तो रसोई का सिलेंडर ले गया

ज़िक्र करते हैं दूसरों का सब
आप बीती नहीं सुनाते हैं
एक से एक सूरमा, घर में
रोज़ बीवी की मार खाते हैं

कोई कहता है माल और दौलत
कोई कहता है इल्म की ताक़त
दो ही चीज़ें जहाँ में अच्छी हैं
अपनी औलाद, ग़ैर की औरत

मेरा कोई सहारा हो तो कैसे
घुटन में हूँ, गुज़ारा हो तो कैसे
मेरी बीवी मेरी दुश्मन बनी है
पड़ोसन को इशारा हो तो कैसे

रहिए बँगले में, चलिए मोटर में
ख़ुद को पैदल घसीटिए ही मत
पाप करने की चीज़ होती है
पाप का नाम लीजिए ही मत

वतन के प्यार से इनका कहीं कुछ वास्ता भी है
जो कहते हैं, वो करते हैं, कभी ऐसा सुना भी है
ये भाषण में तो अपनी जान तक क़ुर्बान करते हैं
किसी नेता का बेटा फ़ौज में भर्ती हुआ भी है

दुख में डूबी जीवन गाथा क्या लिक्खूँ
घर में सूखा है, बाहर हरियाली है
बीवी अपनी बल्ब पुराना बिजली का
एल.ई.डी. की लाइट जैसी साली है

अंबार लग गए तो ये सरकार ने कहा
बिजली बनाई जाएगी कूड़े के ढेर से
बारह बरस पे घूरे के दिन फिर गए, तो क्या
अच्छे दिनों का नूर मिलेगा अँधेर से

पिछले बरस तलक तो बड़ी आन बान थी
ज़ुल्म आपके थे और प्रजा बेज़बान थी
देखा, बड़ी ख़ामोशी से तख़्ता पलट दिया
अब के बरस रिआया ज़रा सावधान थी

तबाही फ़स्लों की ऐसी कि अश्क आँखों में भर डाले
मदद की घोषणा की और विरोधी स्वर कतर डाले
सवा सौ, डेढ़ सौ, दो सौ रुपए बाँटे किसानों को
मगर मंत्री के दौरों में करोड़ों ख़र्च कर डाले

सुनहरी या रुपहली हो चमक, काग़ज़ पे बनती है
बने कैसी भी लेकिन बेधड़क काग़ज़ पे बनती है
पुरानी या नई सरकार हो, कैसे हों अभियंता
सड़क काग़ज़ पे बनती थी, सड़क काग़ज़ पे बनती है

नेता जी रिश्वत ख़ोरी में धरे गए
बोले रोना कैसा, पीड़ा कैसी है
लौटेंगे तो मंत्री पद मिल जाएगा
जेल चले जाने में चिंता कैसी है

यार डॉक्टर अंग्रेज़ी, यूनानी लिखते हैं
अकसर बीमारों की पूरी कहानी लिखते हैं
हैंडराइटिंग ऐसी जिसको पढ़ना भी मुश्किल
इनसे अच्छा चीनी और जापानी लिखते हैं

कहने को समझदार कभी आप कभी हम
मज़हब के परस्तार कभी आप कभी हम
ईमान फ़रोशों से तो नफ़रत भी है लेकिन
दौलत के तलबगार कभी आप कभी हम

हम ये समझे थे कि हमने कोई मैडल पा लिया
ज़ालिमों ने हमसे लेकिन इस तरह बदला लिया
बाद में चमचे, पतीले, प्लेटें धुलवाई गईं
एक दिन होटल में हमने मुफ़्त खाना खा लिया

गवाहों को झिंझोड़ा जा रहा है
उन्हें धमकी से तोड़ा जा रहा है
गए हैं जेल अब कुछ नेक बंदे
गुनहगारों को छोड़ा जा रहा है

अपने पैरों चलकर अपनी इच्छा से
आना होता तो आ जाता काला धन
एक हाथ की ककड़ी है नौ हाथ का बीज
लेकिन भैया विज्ञापन तो विज्ञापन

रोज़ सदन में ख़ूब फ़ज़ीहत होती है
चर्चा करके उनको राहत होती है
इनका, उनका, अपना भी है, इस कारण
काले धन पर सिर्फ़ सियासत होती है

मिले हैं जब से इंटरनेट, मोबाइल
किसी के पीछे अब जाता नहीं है
बहुत हुश्यार है इस युग का मजनूँ
सड़क पर जूतियाँ खाता नहीं है

अपना बेटा दहेज लाएगा
माँ के मन में कहाँ है अब वो आस
पहले होता था सास का रुतबा
आज दिखती है हथकड़ी में सास

लगता है फ़ोन करके पुलिस को पुकारेगा
या ख़ुद हमें पकड़ के वो दस हाथ मारेगा
यह पाँच सौ का नोट तो जिसको भी दीजिए
वह सबसे पहले आपकी सूरत निहारेगा

जिनके हाथों से कभी सिक्का न निकला दान में
उनसे ख़ाकी ने कहा तो जेब ढीली हो गई
कोई बतलाए मुझे खादी का कुर्ता देखकर
कल पुलिस वाले की क्यों पतलून गीली हो गई

ऐसी कविताएँ भी आती हैं जिन्हें सुनने के बाद
जी में आता है कि बस जी भर के गाली दीजिए
ऐसे ऐसे कवि हैं तारीफ़ें नहीं करता कोई
जब भी कविता पढ़ते हैं, कहते हैं, ताली दीजिए

बोलिए कब तक सहें, कहिए तो उठकर भाग जाएँ
कब तलक बतलाइए हम अपनी बदहाली करें
तानसेनी, भीमसेनी सुर में गाते हैं ग़ज़ल
यार इन लोगों से कहिए जाएँ, क़व्वाली करें

कुछ फ़ज़ा बनती है यूँ जिससे बहल जाता है मन
और अकसर यूँ भी होता है कि जल जाता है मन
शायरी सुनते ही मन में झूम उठती है तरंग
शायरों का ज़िक्र आते ही दहल जाता है मन

कालिख है तो फिर उसको हटा क्यों नहीं देते
टूटी हुई दीवार गिरा क्यों नहीं देते
इस तरह से हो सकता है मिट जाए ग़रीबी
इक बार ग़रीबों को मिटा क्यों नहीं देते

झुर्री बढ़ी तो चेहरा सवालों तक आ गया
मेकअप का ढेर मख़मली गालों तक आ गया
मैडम की उम्र खिसकी तो ऐसा बनाया रूप
मेहँदी का रंग हाथों से बालों तक आ गया

कौन कहता है हमारे साथ हैं नाकामियाँ
आओ देखो देश छूता है नई ऊँचाइयाँ
विश्व में क़ायम किया है हमने भी अपना रिकार्ड
तीन सौ पैंसठ दिनों में बीस दर्जन छुट्टियाँ

अब न सरहद न मुफ़लिसी न वतन
हिंदू मुस्लिम न काले धन की बात
सारी बातों को ताक़ पर रखकर
आज कल हो रही है मन की बात

दूषित अगर नदी है तो श्वेता बताएगा
कलियुग अगर हुआ उसे त्रेता बताएगा
सीमा पे लाख वीर सिपाही लहू बहाएँ
नेता स्वयं को युद्ध विजेता बताएगा

हल समस्या को सुझा देते हैं हम
आओ मंज़िल का पता देते हैं हम
क़र्ज़ का है बोझ भारी, इस लिए
क़र्ज़ ले कर ही चुका देते हैं हम

अजब अजब है यहाँ पर अवाम की ख़्वाहिश
जो बेशऊर हैं उनको कलाम की ख़्वाहिश
'मयंक' खुद से भी कमतर समझ लिया शायद
ग़ुलाम रखने लगे हैं सलाम की ख़्वाहिश

फटी क़मीज़ के ऊपर भी टाई होती है
किसी को शर्म नहीं, जग हँसाई होती है
ज़बानें बंद हैं सबकी, बजट है खरबों का
तमाशा देखिए, गंगा सफ़ाई होती है

तरोताज़ा नज़र आए हमें, बूढ़ा नहीं देखा
सभी हँसते मिले, रोता हुआ बँदा नहीं देखा
कोई कुछ भी कहे लेकिन 'मयंक' अपना ये दावा है
दुआ तावीज़ से अच्छा कोई धंधा नहीं देखा

हमारे मुल्क में कुछ बेहिसाब पीते हैं
लगी है लत इन्हें, अच्छी–ख़राब पीते हैं
विलायती के ये आशिक़ हैं देश के दुश्मन
जो देश भक्त हैं, देशी शराब पीते हैं

पहले अपने मुल्क में भी थी मज़े में एकता
अब तो लगता है घिरी है ज़लज़ले में एकता
चर्च, मंदिर में नहीं, गुरुद्वारे, मस्जिद में नहीं
बस नज़र आती है सबको मयकदे में एकता

हमें ऐसा लगा जैसे कि मुस्तक़्बिल चुरा लाए
मगर अकसर ये लगता है कि उनका दिल चुरा लाए
निशानी प्यार की हो पास अपने, बस यही सोचा
गए हम उनके घर, चुपके से मोबाइल चुरा लाए

कोई अंधा है, कोई गूँगा है तो कोई बहरा है
हमारा देश उस बंदर कथा पर अब भी ठहरा है
हमें लगता है अपने देश के अब कोने कोने में
लुटेरे, चोर, डाकू और उचक्कों ही का पहरा है

सारे ग़ुलाम देखिए आज़ाद हो गए
लेकिन वतन से आज भी पतझड़ नहीं गये
तन, मन, दिमाग़ शुद्ध सभी के हुए मगर
आटे से रेत, दाल से कंकड़ नहीं गये

कहीं सीमा पे सैनिक दुश्मनों के शीश लेते हैं
जो अच्छे बच्चे हैं, माँ–बाप से आशीष लेते हैं
कोई सेवा के बदले माँग ले तो हर्ज ही क्या है
अरबपतियों से नेता लोग भी बख़्शीश लेते हैं

नान-वेजीटेरियन हूँ, ठीक है
चाव से लेता हूँ शाकाहार भी
शाकाहारी एकता का दें सबूत
क्यों नहीं चखते हैं मांसाहार भी

कई बँगले, विदेशी गाड़ियाँ हैं मिल्कियत उसकी
बसर उसकी न पूछो बस अमीरी ही अमीरी है
वज़ीर, एम.पी., एम.एल.ए. आके उसके पाँव छूते हैं
वो इन्कम टैक्स देता है मगर पेशा फ़क़ीरी है

अजब पागल है, सुविधा माँगती है
मदद बेकार जनता माँगती है
कोई सरकार से पैसे न माँगे
अभी सरकार पैसा माँगती है

नुस्ख़े हमारे पास बहुत फ़ायदे के हैं
यह रोना छोड़ दीजिए और मुस्कुराइए
कब्ज़ा किसी ज़मीन पे करना है आपको
तो उस ज़मीन पे मंदिरो–मस्जिद बनाइए

प्यार में उनके पिघले जाते हैं
काम पर अपने भूखे जाते हैं
पति परमेश्वर हैं हम उनके
रोज़ बेलन से पूजे जाते हैं

भ्रष्टाचार है अब धर्म जैसा
सदन में घूसख़ोरी हो रही है
ये मंदिर, घर है जो परमात्मा का
वहाँ जूतों की चोरी हो रही है

अब कहाँ कांतिहीन संसद में
सारे चेहरे हसीन संसद में
हाशिए पर है अक़्लमंद इन्सान
और कौड़ी के तीन संसद में

जिसे पसंद किया उसको पाल लेते हैं
दुलार कर के कचूमर निकाल लेते हैं
जो ठेकेदार हैं, जीते हैं क़र्ज़ ले ले कर
मुनाफ़ा सारा विधायक–दलाल लेते हैं

उन्हें पसंद है जो कुछ, ज़बाँ से वह कहिए
सितम वो ढाने लगें तो हर इक सितम सहिए
ये सारे काम अगर नापसंद हैं तो फिर
'मयंक' आप मुहब्बत से दूर ही रहिए

देश में नेता हमेशा से रहे हैं, आज भी
कोई आज़ादी से पहले, कोई आज़ादी के बाद
आप जन्नत और जहन्नम इस तरह से देखिए
ज़िंदगी शादी से पहले, ज़िंदगी शादी के बाद

तुम्हारे हुस्न को देखा तो क्या गुनाह किया
नज़र नज़र से मिला कर मुझे तबाह किया
ये दिल कमीना भी अब तो नहीं रहा मेरा
वही है मेरा मुख़ालिफ़ जिसे गवाह किया

महंगाई, सूखा, बाढ़ अब इक साथ आ गए
घर हों या खेत अनाज का दाना नहीं रहा
और संत कह रहे हैं कि दस पैदा कीजिए
हम दो हमारे दो का ज़माना नहीं रहा

तबाह फ़स्लें हुईं कुछ ऐसी कि खेत सारे धुले हुए हैं
इधर किसानों का हाल यह है, वो ख़ुदकशी पर तुले हुए हैं
हुआ है ऐलान सल्तनत का ख़ुशी मनाओ ख़ुशी मनाओ
नगर नगर में, गली गली में शराबख़ाने खुले हुए हैं

प्रार्थनाओं के भी स्वर आदेश में बिकने लगे
कुछ पुराने, कुछ नए परिवेश में बिकने लगे
अब विदेशी चीज़ें भी दिखने लगीं निर्धन के घर
चाइना के माल जब से देश में बिकने लगे

हुज़ूर हिन्दू मुसलमान काट देती है
बड़े बड़ों के भी यह कान काट देती है
हमारी अर्ज़ पे मंत्री जी धीरे से बोले
पुलिस हमारा भी चालान काट देती है

कोई कहता है यह अत्याचारी है
कोई अक़ीदत से बोला, अवतारी है
हमने इनको छाना, फटका तो पाया
नेता अपनी फ़ितरत से दरबारी है

बस इक फ़ोटो की ख़ातिर मर रहे हैं
वफ़ा की दौड़ में दम भर रहे हैं
सफ़ाई कर्मी हैं आराम से अब
सफ़ाई सारे नेता कर रहे हैं

लग रहा था कठिन, क़रीब आए
साफ़ सुथरे-मलिन क़रीब आए
आ रहा है चुनाव का मौसम
दल बदलने के दिन क़रीब आए

अराजक तत्व जब भी, जिसकी चाहें, जान भी ले लें
पुलिस, गुंडे, मवाली ख़ून की होली सदा खेलें
जो मुजरिम हैं उन्हें सत्ता की गहरी छाया मिलती है
शरीफ़ इन्सान की ख़ातिर हैं अपने देश की जेलें

रोज़ इक जश्न है कहीं न कहीं
रोज़ ही शामियाने तनते हैं
पहले खेतों में फ़स्लें उगती थीं
आज खेतों में फ़्लैट बनते हैं

ठहाकों पर ठहाके लग रहे हैं
यहाँ कविता नचाई जा रही है
पढ़ी है मैंने अपनी शोक-कविता
मगर ताली बजाई जा रही है

गाँधी का नाम देश की रक्षा के वास्ते
गौतम को रख लिया है अहिंसा के वास्ते
गुंडे, लठैत, माफ़िया, ख़ाकी, तिलक, भभूत
यह सारे इंतज़ाम हैं सत्ता के वास्ते

मुहब्बत, प्यार, उल्फ़त, इश्क़, चाहत भूल ही जाओ
कहीं इनकी हमारे देश में रक्षा भी होती है
मुहब्बत करने वाले इन दिनों हैं सख़्त उलझन में
करें अब प्यार कैसे, प्यार में हत्या भी होती है

सियासत देश को जब भी नए सुर–ताल देती है
ग़रीबों को ये लगता है कि रोटी दाल देती है
अदालत, धर्म, शिक्षा दूर हो जाते हैं नज़रों से
हवस आँखों पे इक रंगीन पर्दा डाल देती है

छतें टूटेंगी और न सीढ़ी हटेगी
भला किस तरह चापलूसी हटेगी
उठा है ये नारा कि मुफ़लिस भगाओ
मैं ख़ुश हूँ, वतन से ग़रीबी हटेगी

ऐसा लगता है कि ठंडा पड़ चुका है सबका जोश
लोग बेहोशी की हालत को ही बतलाते हैं होश
कैसा क़ुर्बानी का जज़्बा, इन दिनों बलिदान क्या
अब वतन वालों से क़ीमत माँगते हैं सरफ़रोश

मनाएँ रतजगा हम और दिन उगने पे सो जाएँ
सजाएँ महफ़िलें, मस्ती करें, ख़ुशियों में खो जाएँ
यही है कामना अपनी, यही छोटी सी ख़्वाहिश है
कुछ ऐसा हो कि रातों रात दौलतमंद हो जाएं

कुछ नियम, कुछ अधिनियम दिन रात हैं
पीठ पर जनता की सौ आघात हैं
माफ़िया, क़ानून, वर्दी, कुर्सियाँ
आपकी रक्षा में सब तैनात हैं

माफ़िया हैं, डॉन हैं तो कोई बिज़नेस टाइकून
हर किसी के मुँह लगा इंसानियत का ताज़ा ख़ून
आदमी से जानवर बनने की सुन लीजे कथा
कुछ सियासत का नशा और कुछ है दौलत का जुनून

शुद्ध ताज़ा हवा नहीं मिलती
लोग घुट घुट के जीते रहते हैं
कितने लोगों को जल नहीं मिलता
देवता दूध पीते रहते हैं

क़द की चिंता हुई है बौनों को
और गूंगे सवाल करते हैं
यह सियासत है खेल सर्कस का
जिसमें अंधे कमाल करते हैं

तमाशा है यहाँ चारों तरफ़ ऐंठन-दिखावे का
गिलहरी कह रही है वो किसानों के बराबर है
छिड़ी जब बात समता की, कहा सरकार ने, देखो
किराया रेलगाड़ी का विमानों के बराबर है

भूख, दहशत, बेबसी, बीमारियाँ देखेगा कौन
हादसों के बाद की दुश्वारियाँ देखेगा कौन
भाईचारा, एकता पर रोज़ भाषण दीजिए
आपके मन में छुपी मक्कारियाँ देखेगा कौन

पहले थे जैसे सब उसी सूरत में हैं अभी
मासूम चेहरे देखिए दहशत में हैं अभी
माहौल हमने देखा है, बाज़ार गर्म है
ईमानदार लोग मुसीबत में हैं अभी

खण्ड 3
देशभक्ति

बताओ, कितने हैं जो देश को सम्मान देते हैं
दिखावे के लिए कुछ लोग सीना तान देते हैं
ज़माना तो ज़मीनों और दौलत का पुजारी है
मगर हम तो फ़क़त ख़ाके–वतन पर जान देते हैं

झगड़ा भी होता है आपस में अकसर
लेकिन फिर मिल जुल कर भाई रहते हैं
देश चमन है जिसमें फूलों की सूरत
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई रहते हैं

सियासत की मंडी में रोटी की ख़ातिर
गरीबों ने अपने बदन बेच डाले
तुम्हारी हवस बढ़ गई आज इतनी
शहीदों के तुमने कफन बेच डाले

तमाशों, जादुओं ने सबके ऊपर वो असर डाला
दिखाए खेल दहशत के, दिलों में ख़ौफ़ भर डाला
कभी जन्नत का टुकड़ा था, वतन सोने की चिड़िया था
सियासत ने हमारे देश को नीलाम कर डाला

ज्ञान वालो, ज़रा बताओ मुझे
किसका पाजामा, किसकी धोती है
हिन्दू–मुस्लिम के ख़ून की पहचान
बोलिए किस तरह, से होती है

मैंने कब यह कहा लोग धन छोड़ दें
कब कहा देखें धरती, गगन छोड़ दें
जो तिरंगे को करना नमन छोड़ दें
उनसे कह दो वो मेरा वतन छोड़ दें

था चमन उल्फ़त का, अंगारा हुआ
दुश्मन अपनी आँख का तारा हुआ
जैसे यह दीवार आँगन में उठी
देश का ऐसे ही बँटवारा हुआ

मँजीरे को मँजीरा ही बताना, झाँझ मत कहना
सवेरे के उजाले को कभी तुम साँझ मत कहना
मैं अपने लाल अपने देश की रक्षा में दे आई
मेरी सखियों, कभी भूले से मुझको बाँझ मत कहना

सभी ये कहते हैं जो शख़्स मन से चंगा है
वो संत होता है, कठवत में उसकी गंगा है
न कोई व्यक्ति, न हाकिम, न कोई खद्दर पोश
वतन की शान तो सैनिक हैं, ये तिरंगा है

हवा, पानी, ये धरती क्या तुम्हें स्वीकार है, बोलो
ज़बाँ में किस लिए रक्खी ये मीठी धार है, बोलो
तुम्हारा मन विदेशों में, तुम्हारा धन विदेशों में
तुम्हें इस देश की माटी से कितना प्यार है बोलो

खण्ड 4
सामाजिक

बुढ़ापे के सहारे आजकल वैसे नहीं होते
यहाँ बेटे तो होते हैं, श्रवण जैसे नहीं होते
डिनर और लंच बीवी का सदा होता है होटल में
फ़क़त माँ की दवा के वास्ते पैसे नहीं होते

नई तहज़ीब के बेटे डिनर करते हैं होटल में
मगर बूढ़े पिता को घर में भूखा छोड़ देते हैं
क़साई की बुराई आज कल करने लगे हैं वो
जो बूढ़ी गाय को मरने को छुट्टा छोड़ देते हैं

जब कह दिया तो करके दिखा क्यों नहीं देते
ज़िन्दा अगर है पाप, मिटा क्यों नहीं देते
इस्मत के लूटने पे तो फाँसी की सज़ा है
हम लोग इनको फाँसी चढ़ा क्यों नहीं देते

मुँह सिकुड़ जाता है सियासत का
जब किसानों की बात आती है
आत्महत्या करें या भूखे मरें
तब किसानों की बात आती है

पुलिस, गुंडों, गँवारों से भरी है
कचहरी होशियारों से भरी है
किसी को सौंप दीजे अपनी फ़ाइल
अदालत पेशकारों से भरी है

बदलने के बयान आते हैं, कोशिश कौन करता है
यहाँ नोटों के आगे अब गुज़ारिश कौन करता है
मवाली, माफ़िया, गुंडे ही उतरेंगे सियासत में
शरीफ़ इन्सान की बोलो सिफ़ारिश कौन करता है

किसी मुजरिम से जब पाला पड़े तो
सभी अफ़सर सिपाही ढूँढ़ते हैं
मगर इनकाउंटर में क़त्ल हो जब
ख़ुद अपनी वाह वाही ढूँढ़ते हैं

कहा दरोग़ा से मुंसिफ़ ने ऐसे कुछ नहीं होगा
सज़ाए मौत लिख दूँगा, सियाही ढूँढ़कर लाओ
ये सारे नाम, यह फ़ेहरिस्त, यह तफ़्तीश फ़र्ज़ी हैं
अदालत तक जो आए वो गवाही ढूँढ़ कर लाओ

समाज सेविका खुश है बधाइयाँ लेकर
बिना दहेज लिए वह बहू को लाई है
ये भेद सारे मुहल्ले पे अगले रोज़ खुला
कि नौकरी में बहू है, बहुत कमाई है

लिया है क़र्ज़, नए हाइवे बनाए गए
अब इसपे कितने ही रोज़ाना जान देते हैं
मैं फोरलेन पे फर्राटे भरता रहता हूँ
ये टोल टैक्स मगर जेब काट लेते हैं

जिन्हें ख़्वाबों का चस्का है, हक़ीक़त भूल जाते हैं
मुहब्बत, प्यार, उल्फ़त और अक़ीदत भूल जाते हैं
मगर ऐसे भी कुछ इन्सान अब भी हैं ज़माने में
जो मेहनत करते हैं, पैसों की ताक़त भूल जाते हैं

प्यास रेगिस्तान की सब जानते हैं इस लिए
कारवां ने ऊँटों की गर्दन से छागल बाँध ली
मुफ़लिसी के रोग ने पागल किया यूँ भूख से
इक जवाँ बेवा ने खुद पैरों में पायल बाँध ली

क्या यही हमको सिखाती है हमारी सभ्यता
ज़िंदगी भर के लिए औरत उदासी में रहे
धार्मिक लोगों का ये अंधा तमाशा ख़ूब है
माँ अगर बेवा हुई तो मथुरा-काशी में रहे

न सब्ज़ बाग़ न रंगीन ख़्वाब लिखता हूँ
न जुगनुओं को कभी आफ़ताब लिखता हूँ
वज़ीरी और अमीरी तुम्हें मुबारक हो
मैं मुफ़लिसों के लिए इन्क़लाब लिखता हूँ

जंग में तो अनगिनत परचम खुले
भेद इस दुनिया के फिर भी कम खुले
पट्टियाँ आँखों पे सबकी बँध गईं
मुफ़लिसों के जब यहाँ पर ग़म खुले

जवानों के लिए तो खेल सी होती हैं ये बातें
किसी को पीट देते हैं, किसी की जान लेते हैं
नई तहज़ीब के इस दौर में अक्सर ये देखा है
कि बेटे बाप के ऊपर ही कट्टा तान लेते हैं

बाप रिक्शा चला के पालता है
तन पे कपड़े सभी उधार के हैं
बेटा है महँगी जींस जैकेट में
पाँव में जूते दस हज़ार के हैं

जानवर से प्यार है जिनको यहाँ
उनका भोजन शुद्ध शाकाहार है
और बूढ़ी बेसहारा गायों पर
बोले, इनको पालना बेकार है

आप सुनिए विकास की गाथा
राजनेता बयान करते हैं
यह भी तस्वीर है सियासत की
आत्महत्या किसान करते हैं

बड़े-बूढ़ों से जीने की भी हसरत छीन लेती है
जवानों से इरादा और हिम्मत छीन लेती है
रगों में ख़ून, तन पर माँस ढूँढ़े से नहीं मिलते
ग़रीबी जोंक है, चेहरे की रंगत छीन लेती है

ये रिन्दों ने कहा, हक़ मत जताओ
सभी का है, ये अपना मयकदा है
अमीरे शहर प्यासे ही रहेंगे
इन्हें दरकार पूरा मयकदा है

हर तरफ़ है रिवाज नफ़रत का
मुल्क में अब है राज नफ़रत का
वो जो खुद ही भरे हैं नफ़रत से
क्या करेंगे इलाज नफ़रत का

देश को यूँ महान करने लगे
बूढ़े ख़ुद को जवान करने लगे
नेता बोले कि अच्छे दिन आए
आत्महत्या किसान करने लगे

जो मेहनतकश हैं भूखे रह के भी कांटों पे चलते हैं
मगर सब देवता पत्थर हैं, पत्थर कब पिघलते हैं
यहाँ पहले हर इक इन्सान काई पर फिसलता था
न जाने क्या हुआ अब लोग दौलत पर फिसलते हैं

कोई कहता है कि अनबन में उठी
कोई यह कहता है ऐंठन में उठी
भेद इसका भाभियों को है पता
किस तरह दीवार आँगन में उठी

मस्तक पर चंदन है, कंठी माला है
ढोंगी किसका भाग्य बताने वाला है
कालिख और अँधेरा है मन के भीतर
लेकिन चेहरा कितना भोला भाला है

सबको है इक हसीन की ख़्वाहिश
इक अदद नाज़नीन की ख़्वाहिश
क़ीमती चाहिए दहेज इन्हें
और फिर बेहतरीन की ख़्वाहिश

है सूखी फ़स्ल, फ़लक पर मगर घटा भी नहीं
पसीना सूखेगा कैसे, कहीं हवा भी नहीं
ये चंद चीज़ें ज़माने से हो गईं रुख़्सत
कहाँ ख़ुलूस, कहाँ दोस्ती, वफ़ा भी नहीं

लोग चालाक से मक्कार हुए जाते हैं
अब तो मासूम भी ख़ूंख़्वार हुए जाते हैं
यह सियासत का तमाशा भी अजब है हम लोग
भूखे मर जाने को तैयार हुए जाते हैं

सब गुज़रते रहे इक रोज़ मुहब्बत गुज़री
दूर से हाथ हिलाते हुए उल्फ़त गुज़री
यह ग़रीबी का करम है कि सितम, क्या बोलूँ
किसी मेहमान को देखे हुए मुद्दत गुज़री

कब दुआओं के तीर चल जाएँ
कब ग़रीबी के दिन फिसल जाएँ
जाने किस दिन फटे मेरा छप्पर
जाने हालात कब बदल जाएँ

खुशी कहते हैं जिसको उस खुशी से दूर रहते हैं
वो नादाँ हैं जो दौलत के नशे में चूर रहते हैं
खिला देते हैं हर सू फूल मेहनत के पसीने से
महक उठती है वह धरती जहाँ मज़दूर रहते हैं

बारिश, ओले, आँधियाँ सैलाब हैं
अच्छे ख़ासे लोग भी बेताब हैं
देखिए हालत किसानों की कभी
जिनकी आँखों में सुनहरे ख्वाब हैं

क्या इन्हें ईश का वरदान नहीं मिलता है
या पुरुष जाति में विद्वान नहीं मिलता है
द्रौपदी, सीता, अहिल्या थीं पुराने युग में
अब भी महिलाओं को सम्मान नहीं मिलता है

जागरण की सभाएँ होती हैं
देवियों की कथाएँ होती हैं
सभ्य-शिक्षित समाज है फिर भी
कोख में हत्याएँ होती हैं

या कथाओं में सुनाई जाएँगी
वरना चित्रों में दिखाई जाएँगी
तब तलक ख़तरे में होंगी बेटियाँ
जब तलक बहुएँ जलाई जाएँगी

लूट आज भी है, आज भी होती हैं चोरियाँ
थानों में, चौकियों में भी हैं ख़ाकी वर्दियाँ
आँखें उठा के देख लो तुम भी, विकास ने
खोली हैं गाँव गाँव में दारू की भट्ठियाँ

अन्नदाता देश के और आँख के तारे किसान
हम जिन्हें कहते थे हरियाली के हरकारे किसान
आत्महत्या कर रहे हैं हो के नाउम्मीद अब
क़र्ज़, सूखा, बाढ़, बंजर खेत से हारे किसान

मुद्दत गुज़री हैं हमको आज़ाद हुए
आज़ादी का हम पे असर कब तक होगा
अत्याचारी, अपराधी सम्मानित हैं
नारी का अपमान मगर कब तक होगा

कभी मौसम कभी बीमारियों की मार धरती पर
इधर कचरा उधर जनसंख्या का भार धरती पर
हँसी, राशन, खुशी, कपड़े, मयस्सर कुछ नहीं फिर भी
मनाए जा रहे हैं साल भर त्योहार धरती पर

परेशान मां–बाप के दिल से पूछो
कोई फोन आया न चिट्ठी ही आई
ग़रीबी मिटाने गया था जो बेटा
दिवाली के दिन उसकी मिट्टी ही आई

है पीठ पीछे कुआँ, आगे गहरी खाई है
न ज़िदगी न इन्हें मौत रास आई है
अमीर लोग हैं फ़ैशन में बेहया शायद
मगर ग़रीब का जीना ही बेहयाई है

लुटेरे छोड़िए, अब वर्दी वाले छीन लेते हैं
बताकर डर अँधेरों का उजाले छीन लेते हैं
बहुत कम हाथ हैं जो दूसरों को देते हैं रोटी
बहुत से हाथ हैं मुँह से निवाले छीन लेते हैं

हवाएँ चीर कर आते हैं इस मिट्टी की खुश्बू पर
परिंदे सरहदों के पार से जिस तरह आते हैं
जो बेटे-बेटियाँ रहते हैं सागर पार देशों में
वो घर को बाप-माँ के प्यार में इस तरह आते हैं

यहाँ रोज़ाना तुम जैसे बिगड़ते हैं, सँवरते हैं
हम आईना दिखाने से न डरते थे, न डरते हैं
तुम्हारा ऐश, दौलत, शान–शौकत से भरा जीवन
तुम्हारे बाप–माँ देहात में उपवास करते हैं

अमरीका, अरब, कोरिया, फ़ारस गए बेटे
इक आस की डोरी में हमें कस गए बेटे
तकलीफ़, क़सम, दर्द, चुभन कैसे मिटाएँ
परदेस गए और वहीं बस गए बेटे

ज़िंदा लोगों से मुहब्बत नहीं करता कोई
भाई, घाटे की तिजारत नहीं करता कोई
देखते देखते तहज़ीब ने चोला बदला
बड़े बूढ़ों की भी इज़्ज़त नहीं करता कोई

कोई भी पाप अनदेखा नहीं है
खुदा के घर में समझौता नहीं है
उसे भी छोड़ देंगे उसके बेटे
जिसे माँ बाप की चिंता नहीं है

खण्ड 5

विविध

कोई बदल सका न ये संसार का चलन
सदियों के बाद भी है वही एक आकलन
शिक्षित घरानों में भी मिलेंगे यही विचार
कुल का है दीप बेटा तो बेटी पराया धन

चलो माना ये ऐसे ही जिएगा
मगर खेतों को कैसे सींचिएगा
कई नदियों का पानी मर चुका है
समंदर किस कदर पानी पिएगा

अगर है न्याय में विश्वास, लिखिए
अनूठा और नया इतिहास लिखिए
ख़ता साबित हुई है कैकयी की
भरत के वास्ते वनवास लिखिए

देश तो खंडर से बंजर हो चुका है, देखिए
घूसख़ोरी और सिफ़ारिश ने सफ़ाया कर दिया
खेत में फसलों का इक दाना भी मिलना है मुहाल
धूप, ओलों और बारिश ने सफ़ाया कर दिया

खुदकुशी, हादसे बहाना हैं
आम इन्सान भूख से हारा
ये भरे पेट वाले कैसे मरे
इनको सत्ता की भूख ने मारा

चंद तारीफ़ के जुमलों से निखर जाते हैं
आईना रूबरू रखिये तो ये डर जाते हैं
जो समझदार हैं औरों को सिखाते हैं हुनर
खुद पे आए जो बुरा वक़्त, बिखर जाते हैं

कब तलक फिरते रहेंगे पीठ पर बाँधे सलीब
मतलबी दुनिया की नज़रों में खटकते हैं ग़रीब
किसकी ख़ातिर जी रहे हैं उम्र को ढोते हुए
कोई मोहसिन है न साथी और न हमदम या हबीब

खुशियाँ मिलीं न प्यार के लम्हात ही मिले
लोगों में बस जुनून के जज़्बात ही मिले
आख़िर मैं कैसे करता किसी से कोई सवाल
मुझको तो चेहरा चेहरा सवालात ही मिले

ख़ुशी की घड़ी मुख़्तसर हो रही है
मगर क्या किसी को ख़बर हो रही है
बहुत चैन से सो रहा है ज़माना
सहर हो रही थी, सहर हो रही है

वो हाल है आज ज़माने का, क्या बतलाऊँ दुख होता है
दुनिया में ख़ुशी वाली फ़सलें इन्सान कहाँ अब बोता है
यह बात सुनी है जिस दिन से, उस रोज़ से मैं हँसता ही नहीं
जो सब से ज़ियादा हँसता है वो सबसे ज़ियादा रोता है

बसर कैसे करेगा ज़िंदगानी
ये बूढ़ी सोच और यह नौजवानी
तू दुनिया को भला देखेगा कैसे
मरा अब तक नहीं आँखों का पानी

या मौत है या बीमारी है
हर सम्त वही लाचारी है
इन्सान नहीं बदला लेकिन
मौसम का बदलना जारी है

बेइरादा जो तुमको चलना है
रोज़ गिरना है और सँभलना है
पहले खुद को बदल के देखो अगर
सूरते-हाल को बदलना है

चार पैसे आ गए जब हाथ में
लोग ईश्वर से अधिक होने लगे
एक झटका जब लगा भूकंप का
नास्तिक भी आस्तिक होने लगे

तमाम इल्म, हुनर, ज्ञान बेच देते हैं
बहुत से लोग तो सम्मान बेच देते हैं
अजब हवस का है माहौल, आज दौलत पर
शरीफ़ लोग भी ईमान बेच देते हैं

मिसालें जिनकी हम देते थे, अब वो खाइयाँ कम हैं
पहाड़ों की हमारे दौर में ऊँचाइयाँ कम हैं
किताबों तक ही सीमित है कहावत डूब मरने की
नदी, तालाब, सागर, झील की गहराइयाँ कम हैं

तुमसे तो अक़ीदत है, मुहब्बत ही नहीं है
सच्चा हूँ मुझे झूठ की आदत ही नहीं है
यह शर्त है तुम साथ रहोगे मेरे जब तक
मंज़िल की मुझे कोई ज़रूरत ही नहीं है

दुखों का और दर्दो-ग़म का मारा
यहाँ फ़ाक़ों पे है उसका गुज़ारा
बशर कुत्ते-मवेशी पालता है
गरीबों का नहीं कोई सहारा

क्या अँधेरों ने कोई साज़िश की
अब दिया रोशनी नहीं देता
हर तरफ़ बेहिसी का आलम है
कोई आवाज़ भी नहीं देता

अंदर अंदर उबलते रहते हैं
या सब इक दूसरे से जलते हैं
कोई चेहरा नहीं बदलता है
लोग दर्पण बदलते रहते हैं

चलो माना कि दो-दो चार करना भी ज़रूरी है
गरीबों का मगर उद्धार करना भी ज़रूरी है
अगर मन में तमन्ना है गुलाबों और कलियों की
तो काँटों की चुभन स्वीकार करना भी ज़रूरी है

ये धन, दौलत, ज़मीनें सब तो आ जाते हैं क़ब्ज़े में
चमकती धूप, बारिश और हवा इन्सां के हिस्से में
मगर यह ज्ञान है और ज्ञान सुनते हैं असीमित है
बताओ कैसे आ जाएगा दरिया एक क़तरे में

तालीम याफ़्ता नहीं, जाहिल–गँवार तक
फूलों की बात छोड़िए, बिकते हैं ख़ार तक
पिछला ज़माना और था, अब का ज़माना और
बाज़ार बन चुके हैं ये मंदिर–मज़ार तक

हर तरफ़ छाई काली घटा
किस तरह चाँदनी आएगी
अब अँधेरों का ऐलान है
सबके घर रोशनी आएगी

हवा, पानी, उजाला, तीरगी सब उसके दम से हैं
हँसी, आँसू, उदासी और खुशी सब उसके दम से हैं
हक़ीकत जान ली है अब कोई चिंता नहीं हमको
हमारी मौत, उनकी ज़िंदगी सब उसके दम से हैं

अब कहाँ ज्ञान के पुजारी हैं
सब तो धनवान के पुजारी हैं
आदमीयत की बात मत करना
लोग शैतान के पुजारी हैं

जाहिल यहाँ है रौनक़े-महफ़िल बने हुए
दहलीज़ अब भी झाँक रहा हूँ अदब की मैं
सम्मान पाते हैं यहाँ अनपढ़ अँगूठा टेक
मुद्दत से धूल फांक रहा हूँ अदब की मैं

जो अच्छे लोग हैं वो महफ़िलों से दूर रहते हैं
मगर अंदर ही अंदर दुख से चकनाचूर रहते हैं
हमारा तजरबा लेकिन अलग है सारे लोगों से
जो तन्हाई में होते हैं वही मग़रूर रहते हैं

खेत, फ़स्लें, पेड़-पौधे सबके सब सहमे हुए
आँधियाँ, तूफ़ान, बारिश और हवा के ख़ौफ़ से
अब अक़ीदत और मुहब्बत का ज़माना भूल जा
लोग करते हैं इबादत भी ख़ुदा के ख़ौफ़ से

लोग फूलों के, हार के दुश्मन
ठंडी ठंडी फुहार के दुश्मन
गाँव, जंगल, पहाड़, शहरों तक
बस गए सिर्फ़ प्यार के दुश्मन

ग़रीबों की अलग रख दी, अमीरों ने अलग रख ली
हुनरमंदों ने चालाकी से कुछ यूँ छाँट दी दुनिया
ज़मीं पर सरहदों में काग़ज़ी नक़्शों पे, बतलाओ
लकीरें खींच कर देशों में, किसने बाँट दी दुनिया

बहुत लोगों को तोड़ा साज़िशों ने
किसानों को मिटाया बारिशों ने
ज़मीं की गर्दिशों से ज़लज़ले हैं
मिटाया है हमें भी गर्दिशों ने

आदमी ख़ुद्दार होना चाहिए
या उसे मक्कार होना चाहिए
झूठ, सच, नेकी, बदी, अमृत, गरल
कोई तो आधार होना चाहिए

मेरे मालिक, क्यों रची यह कायनात
दिन ढले तो शाम, उसके बाद रात
तेरा लिक्खा कोई पढ़ सकता नहीं
एक नुक़्ते से बदल जाती है बात

मंदिरो–मस्जिद ये गुरुद्वारे ये चर्च
तुझको माथा टेकने के वास्ते
हर डगर पर काफ़िले हैं, भीड़ है
एक मंज़िल और इतने रास्ते

सभ्य, शिक्षित आदमी की भी तलाश
जो अँगूठा टेक थे, आगे बढ़े
देश के लोगों का होना था विकास
माफ़िया ही नेक थे, आगे बढ़े

ख़ुदा ने हमको ये दुनिया हसीन बाँटी है
ज़मीं, जहन्नुमो-जन्नत, ये तीन बाँटी है
तमाम देश बनाए, बनाए सूबे, शहर
हम आदमी हैं, हमीं ने ज़मीन बाँटी है

रोज़ गुलशन में खिला करते हैं, कुम्हलाते हैं फूल
ख़ुश्बुएँ दुनिया के हर कोने में पहुँचाते हैं फूल
दीन दुखियों की मदद भी कीजिए तो इस तरह
जैसे हरसिंगार के पेड़ों से झर जाते हैं फूल

बाढ़ आई पुत्र मोह की, सायास लिख दिया
नव युग में नव कथा, नया इतिहास लिख दिया
पहुँचे अयोध्या में जो लंका विजय के बाद
फिर हमने राम के लिए वनवास लिख दिया

अँधेरों को कहाँ दुनिया में मात होती है
कहीं कहीं पे तो छः माह रात होती है
जतन करे, कोई कितनी भी कोशिशें कर ले
हवस की क़ैद से किसको निजात होती है

जिया करते हैं इस दुनिया में रहकर मौत सा जीवन
ग़रीबों को तो शायद ज़िंदगी ही मार जाती है
पुराने दौर की सारी कथाएं कुछ भी कहती हों
हमारे दौर में सच्चाई अकसर हार जाती है

नगीने आओ मैं तुमको दिखाऊँ
सभी फुटपाथ पर सोए हुए हैं
जड़े जाएँगे आभूषण में कैसे
यहाँ सब जौहरी खोए हुए हैं

वन, उपवन, खेती, जल तक, सब ओझल हैं
इतना अत्याचार नहीं करता कोई
सुंदरता पर चर्चाएँ तो होती हैं
धरती का शृंगार नहीं करता कोई

कुछ लोग फ़रिश्तों को फ़रिश्ता नहीं लिखते
कुछ लोग दरिंदों को दरिंदा नहीं लिखते
उन लोगों से अच्छे, बहुत अच्छे हैं, जो निर्धन
सोने का क़लम ले के क़सीदा नहीं लिखते

ऊँचे पेड़ों से उलझकर, तिलमिलाती है हवा
ज़ोर कमज़ोरों पे अपना आज़माती है हवा
गाँव में दीपक बुझा कर ख़ुश हुआ करती है रोज़
शहर की बिजली के आगे सर झुकाती है हवा

न ढूँढ़ों ज़मीं पर नमी और हरापन
समझते हो क्या टूटी कड़ियाँ जुड़ेंगी
दरख़्त और काटो, कुएँ ताल पाटो
न मौसम रहेंगे न फ़सलें उगेंगी

कोई राजा, कोई हाकिम तो कोई दास होता है
वो दौलतमंद है, संतोष जिसके पास होता है
मैं चपरासी हूँ जिस दफ़्तर में, बेटा उसमें है अफ़सर
मुझे इस हार में भी जीत का एहसास होता है

कहने को पूजा और इबादत का सिलसिला
माहौल दुश्मनी का है, नफ़रत का सिलसिला
हालाँकि इस जहाँ में मुहब्बत भी है मगर
क़ायम है क्यों ज़मीन पे दहशत का सिलसिला

आस्था लोगों की थी लचकी हुई
जीत फिर ऐसे में लालच की हुई
पालने वाले हैं अब तक ख़ौफ़ में
जैसे-तैसे परवरिश सच की हुई

कारनामे किए जा रहे हैं
ज़ख़्म अपने सिए जा रहे हैं
ख़ूब है मुफ़लिसों का करिश्मा
ज़हर पी कर जिए जा रहे हैं

सभ्य, शिक्षित, समझदार भी आजकल
बस पुरुष मानसिकता के अवतार हैं
भेड़ियों की तरह बाप और भाई भी
आबरू छीन लेने को तैयार हैं

फलों का बोझ अगर है तो पेड़ झुकता है
अब इनको देखिए कैसे ये तन के बैठे हैं
सुना है त्याग, तपस्या का नाम है संन्यास
मगर ये संत, शहंशाह बन के बैठे हैं

फूल कुचल कर इत्र बनाया जाता है
पत्थर-पत्थर शीश झुकाया जाता है
कौन दलित-पिछड़ों की करता है परवाह
उगते सूर्य को अर्घ्य चढ़ाया जाता है

खेतियाँ, कल-कारख़ाने क्या हुए
पंछियों के आशियाने क्या हुए
कोई बतलाए, हमारे देश में
पेड़, पर्वत, वो पुराने क्या हुए

जो उजड़े थे वो फिर उजाड़े गए हैं
कई पेड़ जड़ से उखाड़े गए हैं
यहाँ दिन में सूरज तो रातों में कुहरा
न गर्मी गई है न जाड़े गए हैं

शुद्धता के विरुद्ध भी होगा
और माहौल शुद्ध भी होगा
राह भी होगी गाँधी–गौतम की
तीसरा विश्व युद्ध भी होगा

कोई कितने जतन से छुपाएगा सच
सात पर्दों से भी खींच लाएगा सच
आड़ा, तिरछा कोई रुख़ भी अपनाइए
आईना आईना है, बताएगा सच

हर दिन समझौता हो, अच्छी बात नहीं
अपनों से ख़तरा हो, अच्छी बात नहीं
ख़ामोशी में आहट हो आवाज़ों की
इतना सन्नाटा हो, अच्छी बात नहीं

कोई वज़ीर, कोई शख़्स शाहज़ादा है
बदन बदन पे यहाँ क़ीमती लबादा है
ये बातचीत में लगते हैं ज्ञान के अवतार
मगर किताब का एक एक पन्ना सादा है

मेहनत करता है पर दाम नहीं लेता
चलता है रुकने का नाम नहीं लेता
रोशन करता है इस दुनिया को सूरज
फ़र्ज़ निभाता है, इन्आम नहीं लेता

चाँद तारे भी थकने लगे उस घड़ी
चंद जुगनू चमकने लगे उस घड़ी
मंज़िलें जब ज़रा पास दिखने लगीं
लोग रस्ता भटकने लगे उस घड़ी

ज्ञान की बातें कोई करता नहीं
सत्यता में कोई सुंदरता नहीं
खो गए इस दौर में सब संस्कार
आज बेटा बाप से डरता नहीं

कहीं मजबूरियाँ ही बन गईं सैलाब आँखों में
कहीं भोली हंसी चेहरे पे और महताब आंखों में
हमें मालूम था इनको हिफ़ाज़त की ज़रूरत है
छुपा कर रख लिए हमने बहुत से ख़्वाब आँखों में

रात कुछ ऐसी बसर हो जाये
एक करवट में सहर हो जाये
क्या ज़रूरी है कि मेरे ग़म की
सारी दुनिया को ख़बर हो जाए

पीते नहीं जो डाल के पानी शराब में
करते हैं ग़र्क अपनी जवानी शराब में
ग़ालिब के शेर हों, कि हों कबिरा के दोहरे
कुछ और ही मज़ा है पुरानी शराब में

देखकर मेरी तबीयत ये, परेशाँ हो गई
क्यों मोहब्बत की ज़बाँ नफरत का समाँ हो गई
ऐ सियासत तेरे चलते मेरे हिंदुस्तान में
हिंदी हिंदू हो गई उर्दू मुसलमाँ हो गई

यूँ तो हर इक शख़्स का ईमान होना चाहिए
शर्त इतनी है कि वो इंसान होना चाहिए
हों जहाँ शिव की अज़ानें और खुदा की आरती
वो इबादतगाह हिंदुस्तान होना चाहिए

नसीबों में सुहागन के पिया से दूरियाँ मत रख
हिनाई हाथों में या रब शकिस्ता चूड़ियाँ मत रख
जहाँ बस्ती में बच्चे चाँद को रोटी समझते हों
वहाँ पंगत में पत्तल पर मेरे तू पूड़ियाँ मत रख

ख़त के बदले गुलाब आया है
क्या महकता जवाब आया है
पाँव पड़ते नहीं हैं धरती पर
जब से उन पर शबाब आया है

वहाँ दौलत तुम्हारे पाँव में आँखें बिछाती है
यहाँ कोई तुम्हारी याद में आँसू बहाती है
तुम्हारी सरज़मीं तो याद करती है तुम्हें अक्सर
तुम्हें भी क्या कभी अपने वतन की याद आती है

बीवियों का कब अदब में मन लगे
शायरी इनको मेरी सौतन लगे
रोटी लगती है इन्हें मेरी ग़ज़ल
हाथ में मेरे क़लम बेलन लगे

अँधेरी रात थी हमको बुला लिया होता
अकेलेपन को कुछ ऐसे मिटा लिया होता
रहे वफ़ा में अगर तीरगी का ख़तरा था
चरागे इश्क़ो मोहब्बत जला लिया होता

न जाने कैसे परिन्दे उड़ान भूल गये
ज़मीन याद रही आसमान भूल गये
तुम इनकी बातों पे हरगिज़ यक़ीन मत करना
ये लोग वो हैं जो देकर ज़बान भूल गये